मनफेरवन

एगो अभूतपूर्व व्यक्तित्व पाण्डेय कपिल जी

✍ गंगा प्रसाद अरुण

मन बिसमाधल रहे । ससुरारी के एगो गमी कार्यक्रम से 2 नवम्बर के लौटल रही जमशेदपुर पुरुषोत्तम एक्सप्रेस से । लगभग डेढ़ घंटा लेट एह गाड़ी से अबहीं गया पार कइलहीं रहीं कि पटना से भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के फोन आइल-''पाण्डेय कपिल जी ना रहलीं । आजुए 4.00 बजे के लगभग उहाँ के हमनी का साथ सदा-सदा खातिर छोड़ गइलीं । 'द्विवेदी जी इहो बतवलीं कि अंतिम समय में उहाँ के महामाया प्रसाद विनोदजी के साथे कपिलजी के महाप्रस्थान के गवाह रहलीं । मन खिन्न हो गइल । दुख पर दुख! आ ई त एगो अइसन रिक्ति के सूचना रहे, जेकर क्षति-पूर्ति होइये नइखे सकत । हमरा अउर कुछ ना बुझाइल त अपना लड़िका 'राजेश भोजपुरिया' के एह दुखद घटना के सूचना दिहलीं, जे संजोग से बिक्रमेगंज में बस के इंतजार में रहले । उहो सदमा गइले आ अपना सीमित साधन-माध्यम से एह दुखद समाचार के प्रसारित कइले जेह से कि भोजपुरी से भी लोगन-संस्थान के सूचना मिलल आ दोसरे दिन जमशेदपुर के अखबारन में ई दुखद समाचार प्रकाशित भइल ।

पाण्डेय कपिल जी के ना रहले हम भीषण अवसाद में आ गइलीं । इहाँ के संगे मिले-जुले, बात-बतकहीं ओही गति से चलत चले, जवना गति से पुरुषोत्तम एक्सप्रेस । ऊ सनेह, ऊ आत्मीयता त अब जोहलो पर ना मिली। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दूसरा अधिवेशन (पटना)के मंच से उहाँ से मिलल आत्मीयता-संबंध अंत-अंत तक बनल रहल । अइसना में पटना जाये के कवनो बहाना पाण्डेय कपिलजी से भेंट-मुलाकात-बतकही एगो अजबे उत्साह भर देबे । सवाल-अपेक्षा-प्रशंसा-ओरहन के एगो लंबा कड़ी बनल रहल कपिल जी के साथे । फिर त हर अधिवेशन के अवसर पर उहाँ के प्रेम भरल खोज-आग्रह-'अधिवेशन में जरूर आईं, हमरा नीक लागी।

26-27 मई 1990 के रेणुकूट अधिवेशन के अवसर पर आयोजित तीन पीढ़ियन के प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में पुरनकी पीढ़ी में हमरा से 16 साल से अधिका के पाण्डेय कपिल जी, रहीं बीच के पीढ़ी के हम आ नइकी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में हमरा से 20-21 बरीस छोट संध्या सिन्हा रहली । एह संदर्भ में आदरणीय पाण्डेय कपिल जी के 11-5-1990 के लिखल पोस्टकार्ड हमरा मिलल-'रेणुकूट अधिवेशन में रउआ आपन चुनल तीन गो कविता पढ़े के बा । रउआ समेत कुल तीन कवि के तीन-तीन कविता के पाठ होई आ ओकरा बाद विद्वान लोग ओकरा पर बोली । ...एगो छोट पुस्तिका में तीनो कवि के कुल नौ कविता कवि के संक्षिप्त परिचय का साथे छापा के उहाँ वितरण खातिर ले जाये के बा... ।'

18-19 अक्तूबर 1994 के सम्मेलन के 14वाँ अधिवेशन मुबारकपुर में आयोजित रहे, जवना में आदरणीय जगन्नाथ जी के आपन पाँच गो गजल पढ़े के रहे । कवनो कारण से जगन्नाथजी के मुबारकपुर ना पहुँचला पर पाण्डेय कपिलजी हमरा लगे अइलीं आ आदेश दिहली-''गजल राउर विधा बा आ निहोरा बा कि उहाँ के अनुपस्थिति में ओह गजलन के पाठ रउरे कर दिहितीं त अच्छा रही । एह सौभाग्य के नहकारे के सवाले ना रहे ।

पाण्डेय कपिलजी अराजकता के घोर विरोधी रहलीं । हमरा इयाद बा, 29-30-31 अक्तूबर 1982 के सम्मेलन के

भोजपुरी-हिन्दी के अगड़धत विद्वान-साहित्यकार पाण्डेय कपिल जी के मूल नाम 'पाण्डेय कपिलदेव नारायण सिन्हा रहे जेकरा के घर-परिवार के लोग 'बच्चू बाबू' के नांव से पुकारत रहे । कपिलजी 30-09-1988 के संयुक्त बिहार के राजभाषा उपनिदेशक के पद से सेवा-निवृत्त भइलीं । भोजपुरी के प्रायः हर विधा में अपने के कलम चलल । संपादनो-संगठन में अपने बेजोड़ रहलीं । भोजपुरी में प्रकाशित 'भोर हो गइल' (कविता-संग्रह)-1971), 'फुलसुंघीं (चर्चित उपन्यास-1977), 'कह ना सकलीं' (गजल-संग्रह-1994), 'जीभ बेचारी का करे' (दोहा-संग्रह-2004) आ 'परिन्दा उड़ान पर' (गजल-संग्रह-2007) आदि प्रतिमान बाड़े स । 24-09-1930 के शीतलपुर, बरेजा, सारन (बिहार) में अवतरित एह महाविभूति के 02-11-2017 के देहावसान हो गइल ।

7वाँ अधिवेशन अमनौर में भइल रहे । एह अवसर पर पाण्डेय कपिल जी के अध्यक्षता में आयोजित कवि-सम्मेलन के गवाह 5-6 हजार लोग रहे । टीकासन भर ऊँच एह कवि-मंच पर एगो कविजी आपन ताजा-तातल रचना सुनावे लगले । एह पर कपिलजी के धीरज जवाब दे गइल आ तमतमइले ओह कविजी के फेंकरी में हाथ डाल के मंच से नीचे ढकेल दिहलीं-''चुप चोट्टा ! मुहदुब्बरजी के कविता के आपन बतावत लाज नइखे लागत ?'' अइसन हिम्मती खाली पाणाडेय कपिले जी हो सकत रहलीं । आज के मंच पर त अध्यक्षे-संचालक लोग के कविता डिठारे पढ़ दिहल जात बा आपन बतावत । कविता के अइसन चोरी में मंच-मरजादा कइसन! अइसने अराजकता के खिलाफ उहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से आपन सभ नाता तूर दिहलीं ।

खान-पान में कपिलजी के विशेष ताम-झाम ना सोहात रहे । 19 जून 1999 के जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् उहाँ के साहित्यिक अभिनन्दन से गौरवान्वित भइल । ओह रात परिषद् के सचिव के आवास पर उहाँ के खिआवे-पिआवे के इंतजाम रहे। मुख्य थाली के चारो ओर छोट-छोट 7-8 कटोरी में ना जाने का-का परोसाइल रहे । साथ ही हमनियों 3-4 आदमी के साथे भोजन के आग्रह रहे । भोजन से निपटला के बाद पसगइबत में उहाँ के हमरा से कहलीं -''अरुण जी, सीधा-सादा भोजन हमरा प्रिय ह । भात आ परेहगर मछरी हमरा जतना नीक लागेला ओतना अउर कुछोना । अइसन ताम-झाम हमरा खातिर 'डिस्टर्विंग फैक्टर' ह । हम दोसरा दिने अपना आवास पर भोजन के व्यवस्था कइलीं - उहे मछरी-दाल-भात । साथे तीन गो परहेजियो लोग रहे एके टेबुल पर । बेटी इन्दु एगो परहेजी का सोझा मछरी के पलेट-कटोरा धर दिहलीं आ ओह सज्जन के टोकला पर ऊ उठावते रही कि बगल में बइठल एगो खनिहार रोक दिहले-' आ गइल बा त अब रसोई में वापस ना, पेटे में जाई । इहो हमरे ह-''आ सभे मुस्किया देल । जमशेदपुर से पटना लवट के कपिल जी अपना 27-06-99 के पत्र में लिखलीं - ''प्रिय भाई, परिषद् के समारोह आ रउरा सभे के सत्संग के मधुर स्मृति लिहले हम 21-6-99 के साँझ खा पटना पहुँच गइलीं । एह यात्रा के दौरान रउरा सभे के जे प्रेम आ आत्मीयता मिलल, ऊ जिन्दगी भर इयाद रही, आउर आज के बिसइल माहौल में जीये के हिम्मत देत रही । ...जगन्नाथ जी के...कविता-पत्रिका-खातिर आ सम्मेलन पत्रिका कातिर राउर कुछ नवगीत चाहीं...लिख के, भेज के कृतार्थ करीं।'' हमरा हाथ के लिखन आपन अभिनन्दन-पत्र उहाँ अपना आँख के सोझा राखत रहीं ।

15-10-2011 के सम्मेलन-संचालन समिति के बइठक सम्मेलन कार्यालय, पटना में जमशेदपुर में निर्धारित 24वाँ अधिवेशन के तइयारी-समीक्षा खातिर भइल रहे । बइठक के बाद हम, जयबहादुर सिंह आ अरविंद विद्रोही कपिलजी से मिले खातिर उनका आवास पर गइलीं । उहाँ के आपन सद्यः प्रकाशित संदर्भ-ग्रंथ 'विविधा' के एक प्रति हमरा खातिर रखले रहीं । एह तीनो मूरत के देख के उहाँ के संकोच में पर गइलीं आ 'परिषद् खातिर' लिख के हमरा हाथ में धरा दिहलीं । एकरा के हमार आपन व्यक्तिगत प्रति माने में हमरा कवनो हिचक-संकोच ना भइल आ एह ग्रंथ के सदुपयोग हम अनेक जगह कइले बानीं। एह अनमोल ग्रंथ के बारे में भगवती प्रसाद द्विवेदी जी लिखले बानी-''...विविधा एगो अइसन ऐतिहासिक दस्तावेज बा, जवन भोजपुरी पत्रकारिता के दशा-दिशा पर रोशनी डाले के दिसाई अखियान करे पर अलचार करत बा । साथ ही भोजपुरी पत्रकारिता पर शोध करे वालन खातिर ई संदर्भ-ग्रंथ के भूमिको निबाहत बा । उमेद बा, भोजपुरी हलका के जरत-मरत-बरत मुद्दन, साहित्य-संस्कृति आ सामाजिक चेतना के अनछुअल अउर जरूरी बिन्दुअन पर केन्द्रित सारगर्भित विचारन के ई बेवाक संग्रह 'सुरसरि सम सबकर हित होई' लेखा उपयोगी साबित होई । ई नीर-क्षीर विवेक के जियतार ऐनक बा ।'' एह ग्रंथ पर शम्भुशरण सिन्हा जी लिखत बानी - ''...ई किताब भोजपुरी आन्दोलन में संघर्षरत योद्धा लोग के नायक के जुझारू व्यक्तित्व आ उत्कट जिजीविषा के सबूत (बा) जे अपना समकालीन हिन्दी गीतन के सर्वोच्च शिखर के छू ले लो के बावजूद एक झटका के साथ दृढ़ संकल्पित हो के तन-मन-धन से सकल परिवार, परिजन आ बड़हन मित्र-मंडली का साथ भोजपुरी लेखन के क्षेत्र में उतर आइल आ का गीत, का गजल, का दोहा आ का हाइकु सबमें ईर्ष्य ऊँचाई पा लेल आ ओहू पर भोजपुरी माटी के महक से मह-मह करत आपन कालजयी उपन्यास 'फुलसुंघी' के रचना कइलक । ई किताब, जवना में एह पूरा अवधि के साहित्यिक धड़कन आ हलचल, भोजपुरी रचना ओकर साहित्य के भरे खातिर लेखकीय आकुलता भोजपुरी के मानकीकरण, भोजपुरी अकादमी के गलत भाषा-नीति के प्रबल आ साहसपूर्ण आ उठा पटक से भरल सम्पूर्ण ऐतिहासिक गाथा बा ।''

17-09-1985 के हरिशंकर वर्मा जी नाम लिखल अपना पोस्टकार्ड में कपिल जी उहाँ से 20-9-85 के अपना आवास, 2, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना में आयोजित सम्मेलन-कार्यकारिणी आ प्रवर समिति के बइठक में अनिवार्य रुप से शामिल होखे के अनुरोध कइले रहीं । वर्माजी त ना आ सकलीं बाकिर उहाँ के आपन प्रतिनिधि रूप में हमरा के निर्भीक जी के साथे भेजलीं, जवन कि हमरा के पाण्डेय कपिल जी के निकटतर बनवलस । 6-2-92 के उहाँ के पोस्टकार्ड के माध्यम से भेजल ओरहनो द्रष्टव्य बा । अपेक्षा त ओकरे सेनू होखेला, जेकरा से अपनइती हो !...रउआ हमरा चिट्ठी के कुछ जबाव ना देलीं । काहे? हम रउआ के पत्रिका के एगो डिजाइन बना देबे के लिखले रहीं, कुछ ग्राहक आ सम्मेलन-सदस्य बनावे के लिखले रहीं, पत्रिका प्रकाशन खातिर एक अंक के वित्त-सहयोग करे के निवेदन कइले रहीं, कुछ रचना भेजे के अरज लगवले रहीं, महीना दिन से ऊपर हो गइल चिट्ठी भेजला । राउर 'हाँ-ना' कुछ उत्तर ना आइल । रउआ हमार चिट्ठी मिलल बा कि ना ? मिलल होखे त उत्तर देब कि हमार कवन अपेक्षा रउआ मंजूर कइलीं, कवन ना कइलीं...7-8 मार्च के छपरा में सम्मेलन के बारहवाँ अधिवेशन में त भेंट होइबे करी उमेद करत बानी । चिट्ठी लिखीं.. ।'' अब हम अपना काहिली के का कहीं, सभतर सामरथी रहलो पर हम ई कुल्हि अपेक्षा तब शायद पूरा ना कर सकल रहलीं, जेकर मलाल रहल ।

फिर उहाँ के अपना 17-10-96 के पत्र में लिखलीं - ''...ग्राम विकास केन्द्र के विज्ञापन अक्तूबर 96 के अंक में प्रकाशित हो गइल बा । अंक के दू प्रति ग्राम विकास केन्द्र...के

पता पर रजिस्टर्ड डाक से भेज रहल बानी । राउर अइसने निर्देश रहे।...पता क के पेमेंट भेजवावे के कृपा करब...।'' एही संदर्भ में अपना 18-12-96 के पोस्टकार्ड में लिखलीं-''...राउर 13-12-96 के चिट्ठी आ ग्राम विकास केन्द्र के विज्ञापन शुल्क के एक हजार रूपया के ड्राफ्ट मिलल । पत्रिका के वित्त-पोषण खातिर रउआ सोचत बानी, जान के खुशी भइल ।...मनोकामना अजय के लघुकथा मिलल बा । लघुकथा अंक के मैटर प्रेस में दिया गइल बा । लुकार खातिर हमार रचना मिल गइल बा, जान के प्रसन्नता भइल । कुछ नवगीत लिखा जाय त आगे खातिर भेजे के कृपा करब । उमेद बाजे सपरिवार सानंद होखब...।'' आउर एह विनम्रता के जोड़ कहाँ बा ? 15-4-97 के चिट्ठी के देखीं - '...रउआ से फोन पर बात भइला के दस मिनट बादे ई चिट्ठी लिख रहल बानी । श्री जय बहादुर सिंह के पता सम्मेलन रेकार्ड में अबहियों गलत रह गइल ह । उनकर पुरनके पता फिर लिखा गइल रहल ह । अबगे देखलीं ह त करेक्शन कर देलीं ।... अपना गलती पर हम लज्जित बानी...।'' 21-4-97 के चिट्ठी में उहाँ के लिखलीं-''...राउर 16-4-97 के चिट्ठी एगो नवगीत आ 1500/- रु. के चेक मिलल । धन्यवाद ! राउर आ जय बहादुर सिंह के अलग-अलग रसीद पत्रिका के अगिला अंक में डाल के भेजब । आउर नवगीत पसंद आइल । अगिला अंक (जून-97) में छपी । कुछ आउर रचना भेजत-भेजवावत रहीं, इहे निहोरा बा...।''

एकरा बाद फोन के सुविधा होखे से चिठिऑव-पतिऑव कम हो गइल बाकिर संबंध-सम्पर्क अटूट रहल । अपना 21-06-2010 के पत्र में उहाँ के लिखलीं-''...प्रिय अरुण जी, 'अंगना महुआ झरल' पहिले दू बेर पढ़लीं । ओकरा बाद सत्यनारायण के लिखल भूमिका पढ़लीं, आ तब फेर दू बेर पढ़लीं आ रचना के आनन्द उठवलीं । राउर काव्य-विवेक के पड़ताल सत्यनारायण भूमिका स्वरूप कइले बाड़े, ऊ राउर कविता के रस लेबे में बहुत सहायक भइल। ...'अंगना महुआ झरल' में राउर कलम अपना पिछिला अवदान से कहीं आगे चल रहल बा भगवान रउरा रचना-क्रम के अइसहीं परवान चढ़ावत रहस...।''

पाण्डेय कपिलजी साबित कर दिहलीं कि व्यक्ति पद से ना प्रतिभा से पहचानल जाला । 1973 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना में सक्रिय भूमिका निभावे वाला कपिल जी आपन हिन्दी-रचना-क्षेत्र के पूरा पूरी तज दिहलीं आ भोजपुरिये नीनि जागत-सूतत रहलीं । सम्मेलन से हटला का बादो अंत-अंत तक भोजपुरिये के आगी-काठी जरत-बरत जीयत रहलीं । उहाँ के पूरा कुनबा साहित्य-कला प्रतिभा के सोनहुला खान ह । भोजपुरी के कवन अइसन विधा बा जवना में पाण्डेय कपिल जी के गहिरा पैठ-पकड़-समझ ना रहे ? परिवारवाद-जातिवाद के त अछरंगे बाहियात-फिजूल । उहाँ के सब के बान्ह के चले में विश्वास करत रहीं, बाकिर अपनहीं बन्हा ना सकलीं जिनिगी से । साँच कहल जाय त इहाँ के कबो भूतपूर्व ना, हरमेसे अभूतपूर्व बनल रहलीं । एह अभूतपूर्व सिरजन-दूत के इयाद के हमार कोटिशः नमन । ■

****